

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ طِبْسَمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

माह व सिन (मदनी) \_\_\_\_\_ (ईसवी) \_\_\_\_\_

डिवीज़न \_\_\_\_\_

डिवीज़न मुशावरत जिम्मेदार (उम्मे / बिनते) \_\_\_\_\_

### शिडयूल (डिवीज़न मुशावरत जिम्मेदार)

काबीना \_\_\_\_\_

❖ शिडयूल मदनी काम के तवील तरीन तजरिबात का नीचोड़ होता है, लिहाज़ा हम में से हर एक को चाहिए कि मदनी काम शिडयूल के मुताबिक़ करे। शिडयूल पर अमल की बरकत से तमाम मदनी काम मुनासिब वक़्त पर हो जाएंगे। ❖ हर सतह की मुशावरत जिम्मेदार को चाहिए कि हर माह अपनी मातहत जिम्मेदारान का शिडयूल खुसूसी तवज्जोह देते हुवे चेक करें, कमी होने की सूरत में हाईलाइट कर के तवज्जोह दिलाई जाए। ❖ शिडयूल पुर करते वक़्त झूट और मुबालगा आराई से बचते हुवे जिस मदनी काम को जिस अन्दाज़ में करने का लिखा है, अगर उस के मुताबिक़ जिस क़दर अमल रहा हो, वोही हकीक़ते हाल लिखी जाए।

नम्बर शुमार	मदनी काम	दौरानिया	पेहला हफ़्ता	दूसरा हफ़्ता	तीसरा हफ़्ता	चौथा हफ़्ता	पांचवां हफ़्ता
1	(a) हर हफ़्ते अपनी हुदूद के अलग अलग ज़ैली हल्कों के तीन और जामिअतुल मदीना / मद्रसतुल मदीना (लिल बनात) में होने वाले एक हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में अव्वल ता आख़िर शिक़त। (माह में चार बार)	2 घन्टे	ज़ैली हल्का _____ ता _____	ज़ैली हल्का _____ ता _____	ज़ैली हल्का _____ ता _____	जामिअतुल मदीना / मद्रसतुल मदीना (लिल बनात) _____ ता _____	ज़ैली हल्का _____ ता _____
	(b) इनफ़िरादी कोशिश व आख़िर के मदनी काम।	26 मिनट	_____ ता _____	_____ ता _____	_____ ता _____	_____ ता _____	
	(c) ऐसी इस्लामी बहनें जो पेहले मदनी माहोल से वाबस्ता थीं, अब नहीं आतीं, उन के घर जा कर ज़रूर इनफ़िरादी कोशिश करना या अपनी मातहत इस्लामी बहनों की खुशी या ग़मी के मौक़अ पर दिलजूई के लिए जाना।	26 मिनट	ज़ैली हल्का _____ ता _____	ज़ैली हल्का _____ ता _____	ज़ैली हल्का _____ ता _____	ज़ैली हल्का _____ ता _____	ज़ैली हल्का _____ ता _____
	(d) हर हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ के आख़िर में जिम्मेदारान के साथ हदफ़ के सिलसिले में मदनी मश्वरा। (माह में एक बार)	26 मिनट	_____ ता _____				

2	(a) हर हफ्ते अपनी हुदूद के अलग अलग अलाकों के किसी भी एक जैली हल्के के अलाकाई दौरे में शिर्कत ।	1 घन्टा 40 मिनट	जैली हल्का _____ ता _____	जैली हल्का _____ ता _____	जैली हल्का _____ ता _____	जैली हल्का _____ ता _____	जैली हल्का _____ ता _____
	(b) हर हफ्ते (अलाकाई दौरे वाले दिन या ब सहूलत जिस दिन मुमकिन हो) चन्द जिम्मेदारान के दसों बयान के हल्के में तिलावत, नात, दर्स, बयान व दुआ सुनना ।	41 मिनट	_____ ता _____	_____ ता _____	_____ ता _____	_____ ता _____	_____ ता _____
	(c) अपने अलग अलग जैली हल्कों के मद्रसतुल मदीना (बालिगात) में तरकीब बेहतर बनाने के लिए शिर्कत । (माह में एक बार)	19 मिनट	_____ ता _____				
3	(a) माहाना मदनी हल्के में अव्वल ता आखिर शिर्कत ।	1 घन्टा 12 मिनट	_____ ता _____				
	(b) आखिर के मदनी काम ।	26 मिनट	_____ ता _____				
4	(a) जैली जिम्मेदार नीज अपनी शोबा मअ इदारती शोबा जिम्मेदार का इजलास लेना । (माह में एक बार)	3 घन्टे	_____ ता _____				
	(b) काबीना जिम्मेदार के साथ माहाना इजलास में शिर्कत (शरई सफर होने की सूरत में जनवरी, मई, सितम्बर में बिल मुशाफा शिर्कत की जाए) ।	3 घन्टे	_____ ता _____				
	(c) जोन जिम्मेदार जब आप के डिवीज़न में शोबे के लिहाज से इजलास की तरकीब बनाएं, तो लाजिमी शिर्कत की जाए ।	3 घन्टे	_____ ता _____				

	(d) अचानक किसी एक अलाका जिम्मेदार के इजलास (जो वोह हल्का व जैली जिम्मेदार का लेती हैं उस) की तफ्तीश करना। (माह में एक बार) (सिर्फ मुल्के मुर्शिद के लिए)	2 घन्टे	अलाका _____ , _____ ता _____			
	(e) पूरे डिवीज़न में मोहर्रमुल हराम, रबीउल आखिर, रजबुल मुरज्जब, शव्वालुल मुकर्रम, में जहां नई जैली जिम्मेदार का तक्रर हो, तो इजलास रख कर “निकात बराए जिम्मेदार इस्लामी बहनें” के जरीए उन की सतह के लिहाज से निकात के हर हर रिकोर्ड पेपर को अच्छी तरह समझाने की तरकीब बनाएं।	3 घन्टे	मोहर्रमुल हराम _____ ____ ता _____	रबीउल आखिर _____ ____ ता _____	रजबुल मुरज्जब _____ ____ ता _____	शव्वालुल मुकर्रम _____ ____ ता _____
	(f) फरवरी और जूलाई में हफ्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआत की जिम्मेदारान का इजलास रख कर कारकदर्गी बराए हफ्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ और इजाजत नामे समझाए जाएं।	2 घन्टे	फरवरी _____ , _____ ता _____			जूलाई _____ , _____ ता _____
5	हर दो माह बाद (जनवरी, मार्च, जूलाई, सितम्बर, नवम्बर) तावीजाते अतारिय्या के बस्ते पर तफ्तीश के लिए जाना।	60 मिनट	मक़ाम _____ , _____ ता _____			मक़ाम _____ , _____ ता _____

**निकात :** ❖ अपने घर से निकल कर करने वाली तमाम तन्जीमी मसरूफ़ियात को मगरिब तक ख़त्म फ़रमा लीजिए। ❖ इनफ़िरादी इबादत, तिलावत, शजरह शरीफ़ के अवराद, मुतालाआ, फ़र्ज उलूम सीखना, मदनी इन्आमात पर अमल और रोज़ाना गौरौ फ़िक्र के मामूलात को अपने शिडयूल का लाजिमी हिस्सा बनाइए। ❖ वक्त की पाबन्दी को इख़्तियार कीजिए कि येह शख़्सियत का ज़ेवर है।

**मातहतों के शिडयूल चेक करने के निकात :** मातहतों के शिडयूल के हासिल कर्दा नम्बर देने के साथ साथ दर्जे जैल निकात पर अमल किया जाए : (1) अगर मतलूबा दौरानिये से कम वक्त दिया, तो अहसन अन्दाज़ में तफ़हीम की जाए। (2) शिडयूल में दिए गए जिस मदनी काम पर अमल न हो, तब भी कमी पर तवज्जोह दिला कर अहसन अन्दाज़ में समझाया जाए और आइन्दा के लिए निय्यते करवाई जाएं।

**शिडयूल में नम्बर देने से मुतअल्लिक दर्जे जैल निकात का लिहाज रखा जाए :** (1) किसी एक मदनी काम के मुकर्ररा नम्बरों को दिए गए एक से ज़ाइद मदनी कामों में तक्सीम कर लिया जाए, मसलन शिडयूल और कारकदर्गियां वक्त पर जम्अ करवाना और शिडयूल चेक करना के 3 नम्बर हैं, अब अगर शिडयूल वक्त पर जम्अ करवाया, तो एक नम्बर, कारकदर्गियां वक्त पर जम्अ करवाई, तो

एक नम्बर और मातहत का शिडयूल भी चेक किया, तो एक नम्बर, यूँ कुल 3 नम्बर दिए जाएंगे। (2) इसी तरह अगर कोई मदनी काम माह में 4 बार करना है, तो मुकर्ररा नम्बर को भी 4 हिस्सों में तकसीम कर के नम्बर दिए जाएंगे, मसलन चार हफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में से एक इजतिमाअ में शिर्कत की, तो आधा नम्बर, दो में की, तो एक नम्बर, तीन में की, तो डेढ़ नम्बर और चार में की, तो मुकम्मल 2 नम्बर मिलेंगे। **عَلَى هَذَا الْقِيَاسِ** (3) इसी तरह अगर किसी मदनी काम के दौरानिये के मुताबिक़ मुकम्मल वक़्त शिर्कत नहीं की, तब भी मुकम्मल नम्बर ही दिए जाएंगे, मसलन माहाना डिवीज़न मदनी हल्के में 2 घन्टे 26 मिनट शिर्कत करनी थी, उस ने 2 घन्टे शिर्कत की, तब भी पूरे नम्बर दिए जाएंगे। (4) अलाकाई दौरे में शिर्कत के 1 नम्बर रखे गए हैं, अगर किसी ने 4 हफ़ते शिर्कत की, तो 1 नम्बर, दो हफ़ते शिर्कत की, तो आधा नम्बर और सिर्फ़ एक हफ़ते शिर्कत की, तो आधे का आधा नम्बर दिया जाए। (5) जिन शोबों के स्पेशल काम दर्ज नहीं, अगर वोह शोबे के निकात के मुताबिक़ शोबे का मदनी काम करें, तो 2 नम्बर दिए जाएंगे। (6) अगर कोई मदनी काम 6 माह या 12 माह में एक बार करना हो, तो जब तक 6 या 12 माह न हो जाएं, कुल में से वोह नम्बर निकाल दिए जाएं, जिस माह अमल हो, तो टोटल में उस माह उस के नम्बर और हासिल कर्दा नम्बर शुमार किए जाएं। (7) अगर किसी जिम्मेदार के पास दो सतहों की जिम्मेदारी हो और दोनों सतहों पर शोबा एक ही हो, ऐसी सूरत में जिस सतह की जिम्मेदारी बड़ी हो, उस के शिडयूल को मुकम्मल पुर कर के जम्अ करवाएं और जिस सतह पर नीचे सतह की जिम्मेदारी हो, उस नीचे सतह की जिम्मेदारी वाले शिडयूल पर उस सतह से मुतअल्लिक़ काम (जिन का ऊपर सतह पर जिक़र नहीं था) पर जवाब लगा कर मजलिसे मुशावरत व शोबा जिम्मेदार को जम्अ करवाएं। (8) अगर कोई 8 मदनी काम की जिम्मेदार तो हो लेकिन अफ़रादी कुव्वत कम होने की वजह से उस के पास दो या तीन शोबे भी हों, तो अपनी मजलिसे मुशावरत जिम्मेदार को शिडयूल जम्अ करवाए, साथ ही मुतअल्लिक़ा शोबे के स्पेशल काम लिख कर मुतअल्लिक़ा शोबा जिम्मेदार को शिडयूल पर जम्अ करवाए। **अलामी मजलिसे मुशावरत (दावते इस्लामी)**

दर्जे जैल नम्बरिंग बक्स के ज़रीए शिडयूल चेक किया जाएगा		
कुल नम्बर 12 (डिवीज़न मुशावरत जिम्मेदार के लिए)	मुकर्ररा नम्बर	हासिल कर्दा नम्बर
सुन्नतों भरे इजतिमाअ में शिर्कत	02	
माहाना मदनी हल्के में शिर्कत	02	
शिडयूल और माहाना कारकदर्गी मुकर्ररा तारीख़ पर जम्अ करवाना और शिडयूल चेक करना	03	
हर हफ़ते अलाकाई दौरे में शिर्कत	01	
हर माह अलग अलग जैली हल्के में जैली जिम्मेदार मअ शोबा जिम्मेदार का इजलास लेना	02	
माहाना बिल मुशाफ़ा काबीना / ज़ोन के इजलास में शिर्कत	02	
<b>कुल नम्बर मअ फ़ीसद</b>	<b>12</b>	

मदनी काम	निकात (डिवीज़न मुशावरत जिम्मेदार)	अमल होने की सूरत में “ <b>ل</b> ”, न होने की सूरत में “ <b>0</b> ” लगा दें
हफ़तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ	❖ अपनी मुशावरत (इलावा दारुस्सुन्नह जिम्मेदार) मअ शोबाजात जिम्मेदारान (डिवीज़न सतह) और जामिअतुल मदीना की नाज़िमा और दारुल मदीना की नाज़िमा को अलाकाई मुशावरत जिम्मेदारान की मुशावरत से येह रेहनुमाई कर दी जाए कि “मुसल्लसल 6 हफ़ते तक कमज़ोर या जहां नया काम शुरू करना हो”, किस अलाके के किस “हफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ” में शिर्कत करनी है ? ❖ डिवीज़न जिम्मेदार जब अपनी शोबा	

	<p>मुशावरतों को 6 हफ्तों के लिए कमजोर या नए इजतिमाअ शुरू करने के लिए जैली हल्के में हफ्तावार इजतिमाअ के लिए भेजें, तो दीगर तमाम शोबाजात से भी मालूम कर लें कि उन के शोबे के हवाले से किन मुआमलात पर बेहतरी की हाजत है ताकि वहां तरकीब बनाई जा सके नीज जिम्मेदार को चाहिए कि 6 हफ्तों तक फिक्स करने के बाद ब जरीआ इजतिमाअ जिम्मेदार या खुद मजबूत Follow Up भी करें। ❖ हर हफ्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में बयान या दुआ की सआदत जरूर हासिल की जाए। ❖ हफ्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में “कारकदर्गी बराए हफ्तावार सुन्नतों भरा इजतिमाअ” के मुताबिक तफ्तीश की तरकीब बनाई जाए और आखिर में इजलास लिया जाए। ❖ हफ्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ के आखिर में या ब सहूलत जिस दिन मुमकिन हो, नई इस्लामी बहनों और मदनी कामों में सुस्त पड़ जाने वाली इस्लामी बहनों पर इनफिरादी कोशिश कर के उन को मदनी कामों के लिए तय्यार किया जाए। ❖ दिलजूर्ई या इनफिरादी कोशिश के लिए अपने वक्त की सहूलत के हिसाब से हफ्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ से कब्ल या बाद में जाने की तरकीब बनाई जाए, अगर ब जरीआ फोन इस की तरकीब बनाई, तो शिडयूल में नहीं लिखा जाएगा। बैरूने मुल्क ब जरीआ फोन तरकीब बनाई जा सकती है। ❖ माह में एक बार अपने डिवीज़न के किसी भी जामिअतुल मदीना / मद्रसतुल मदीना और दारुल मदीना (लिल बनात) में जा कर नाजिमात, मुदर्रिसात और तालिबात के दरमियान सुन्नतों भरे इजतिमाअ में बयान और 12 मिनट इनफिरादी कोशिश के जरीए मदनी कामों का जेहन दिया जाए। अगर रुकने शूरा का बयान हो, तो फिर 12 मिनट इजतिमाई या इनफिरादी कोशिश फरमाएं। जिन मुआमलात पर तालिबात की कमजोरियां हैं, वोह पेहले से नाजिमा से मालूम कर ली जाएं, इस के हवाले से नियतें करवाई जाएं। ❖ माहाना कारकदर्गी फ़ॉर्म का जाइज़ा लें, मदनी कामों में जो कमजोरी हो, बात चीत कर के मदनी कामों की तरक्की के लिए तरगीब दिलाएं और अहदाफ़ दें मगर तदरीस व इन्तिजामी मुआमलात के हवाले से कलाम न किया जाए। अहदाफ़ में माहाना कारकदर्गी फ़ॉर्म के जरीए मुबल्लिगा, मोअल्लिमा और जिम्मेदारान की तादाद बढ़ाने का हदफ़ दिया जाए।</p>	
अलाकाई दौरा	26 मिनट “अलाकाई दौरे से कब्ल तरबियत के निकात” के मुताबिक तरकीब बनाई जाए फिर 1 घन्टा 12 मिनट घर घर जा कर नेकी की दावत दी जाए।	
माहाना मदनी हल्का	<p>❖ माहाना मदनी हल्के में बयान की तरकीब बनाई जाए और कभी बयान सुन कर चेक किया जाए, कमजोरियों पर इस्लाह की जाए।</p> <p>❖ तमाम शोबे खुद करने के बजाए कोई भी एक शोबा कर के बताया जाए। ❖ माहाना मदनी हल्के के जिन मुआमलात में कमी महसूस हुई, आखिर में माहाना मदनी हल्का जिम्मेदार इस्लामी बहन और जरूरतन मुतअल्लिका इस्लामी बहन को इजलास कर के समझाने की तरकीब की जाए। ❖ डिवीज़न व अलाका सतह से उन के शोबों के हवाले से और मदनी कामों की बेहतरी के लिए उन के इजलास और मसाइल मालूम कर के उन के हल की तरकीब बनाई जाए। माहाना मदनी हल्के के आखिर में हर माह पाबन्दी के साथ माहाना मदनी हल्के में शिर्कत की तरगीब दिलाई जाए। जिम्मेदारान में मदनी कामों की सुस्ती होने की सूरत में उन पर इनफिरादी कोशिश की जाए।</p>	
तहरीरी काम	बयानात की तय्यारी, कारकदर्गी फ़ॉर्म पुर करने, मातहत की कारकदर्गियों पर तवज्जोह देने और आइन्दा हफ्ते के मदनी काम बेहतर बनाने के लिए पूछगछ (Follow Up), आइन्दा हफ्ते शिडयूल की तय्यारी (इत्तिलाअ वगैरा देने) की तरकीब बनाई जाए।	
मेहफिले नात	माह में एक, दो बार ग़मी और खुशी के मवाकेअ पर जरूरतन (जब जब आसानी हो) मेहफिले नात की तरकीब बनाई जा सकती है।	

12 दिन के रिहाइशी कोर्सिज	मुमकिना सूरत में 12 माह में एक बार 12 दिन का मदनी काम कोर्स / 12 दिन का इस्लाहे आमाल कोर्स की तरकीब बनाई जाए। बैरूने मुल्क की इस्लामी बहनें बाबुल मदीना में आ कर येह कोर्स करें या ब सूरते दीगर अपने मुल्कों में होने वाले 3 दिन के रिहाइशी कोर्सिज, मदनी काम कोर्स और मदनी इन्आमात कोर्स करें, तो अमल मान लिया जाएगा।	
निकात का मुतालआ	12 माह में एक बार जिम्मेदार अपने तमाम और शोबा मुशावरत अपने तमाम शोबों के निकात मअ रिकोर्ड पेपर्ज पढ़ लें। क्या इस साल आप ने पढ़ लिए? (इस का जवाब दिसम्बर में दें)	
माहाना इजलास	<p>❖ माहाना कारकदर्गी जम्अ करवाने के अगले दिन तमाम अलाकाई मुशावरत जिम्मेदारान और अपनी तमाम डिवीज़न मुशावरतों का इजलास 3 घंटे का लिया जाए। <b>माहाना इजलास का जदवल :</b> तिलावत (3 मिनट), नात शरीफ (5 मिनट), अख्ताके मुबल्लिगए दावते इस्लामी के 21 हुरूफ की निस्बत से जिम्मेदारान के 21 निकात (5 मिनट), नियतें (3 मिनट), गौरो फ़िक्र (3 मिनट), निगराने मुल्के मुर्शिद इन्तिज़ामी काबीना के दफ्तर से आने वाला बयान (26 मिनट), मख़सूस (मख़सूस मौकअ जब आए) और माहाना कारकदर्गी का तकाबुल मअ हौसला अफ़ज़ाई कारकदर्गी शिडयूल चेक करना और उस के मुताबिक़ तफ़्हीम करना, शिडयूल के हासिल कर्दा नम्बर पर हौसला अफ़ज़ाई करना (26 मिनट), आइन्दा माह के अहदाफ़ बिल खुसूस तकरूरियां मुकम्मल करने के अहदाफ़ देना (5 मिनट), अपने शोबे के मदनी काम, मख़सूस मवाक़ेअ के निकात जब आए, तो वोह निकात, वरना जिम्मेदार व मदनी मुजाकरे के निकात पर कलाम, मसलन 2 / 4 तरतीब वार सफ़हात पढ़े जाएं, 12 माह में एक बार मुकम्मल जिम्मेदार के निकात पढ़ लिए जाएं। इस पर बात चीत और फ़ोलोअप हो (जनवरी और जूलाई में हुक्कुल इबाद की अदाएगी और मदनी काम (येह रिकोर्ड पेपर जिम्मेदार के निकात में मौजूद है)) अच्छी तरह मातहत को समझाए जाएं (45 मिनट), मातहत के मसाइल सुनना और निकात के मुताबिक़ जवाब देना (30 मिनट), इस माह अपनी जिम्मेदार की तरफ़ से मिलने वाले निकात पर कलाम (26 मिनट), दुआ व मजलिस के इख़िताम की दुआ (3 मिनट)। <b>निकात :</b> (a) जो जिम्मेदारान ग़ैर हाज़िर हों, उन तक निकात पहुंचाए जाएं। (b) 15 दिन क़ब्ल मुतअल्लिका जिम्मेदारान को इजलास की पेशगी इत्तिलाअ दी जाए। (c) इजलास में मसाइल व निकात लाने का ज़ेहन दिया जाए। इस इजलास में मजलिस के तहत शोबाजात (जामिअतुल मदीना की नाज़िमा, मद्रसतुल मदीना की डिवीज़न नाज़िमा, दारुल मदीना की नाज़िमा) की भी शिर्कत करवाई जाए। ❖ माह में एक बार अलग अलग अलाके में बिग़ैर इत्तिलाअ दिए किसी भी एक अलाके में जा कर “अलाकाई जिम्मेदार का माहाना इजलास” की तफ़्तीश की जाए, कमज़ोरी होने पर अहसन तरीक़े से तफ़्हीम की जाए और शफ़क़त के साथ मदनी काम करने का मदनी अन्दाज़ और तरीक़े कार के मुताबिक़ तरबियत की जाए। ❖ काबीना जिम्मेदार अगर किसी डिवीज़न में इजलास लें, तो डिवीज़न जिम्मेदार ज़रूर शिर्कत करें। ❖ जिस माह आप की जिम्मेदारान में से किसी ने आप की मातहत सतहों का इजलास लिया, तो उस माह आप अपनी मातहतों का इजलास नहीं लेंगी और आप की शिर्कत करना ही आप के इजलास लेने में शुमार हो जाएगा। ❖ अपनी मुशावरतों और मातहतों को दारुस्सुन्नह के रिहाइशी कोर्सिज में तादाद बढ़ाने का भी हदफ़ दिया जाए।</p>	
शिडयूल चेक करना	❖ क्या अपनी मातहत जिम्मेदार शोबा जिम्मेदार का शिडयूल चेक कर लिया? ❖ शोबा मुशावरतों के शिडयूल के नम्बरिंग बक्स में नम्बर मुतअल्लिका शोबा जिम्मेदार ही देंगी।	

**निकात :** ❖ अपने घर से निकल कर करने वाली तमाम तन्ज़ीमी मसरूफ़िय्यात को मग़रिब तक ख़त्म फ़रमा लीजिए। ❖ इनफ़िरादी इबादत, तिलावत, शजरह शरीफ़ के अवराद, मुतालआ, फ़र्ज उलूम सीखना, मदनी इन्आमात पर अमल और रोज़ाना गौरो फ़िक्र के मामूलात को अपने शिडयूल का लाज़िमी हिस्सा बनाइए। ❖ वक़्त की पाबन्दी को इख़्तियार कीजिए कि येह शख़्सिय्यत का ज़ेवर है।

**आलमी मजलिसे मुशावरत (दावते इस्लामी)**